7:13
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

जानिए बिहार का भूगोल

बिहार भारत के प्रमुख राज्यों में से एक है। इसके उत्तर में नेपाल, पूरब में प. बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में झारखंड राज्य स्थित हैं। यहाँ अनेक नदियाँ बहती हैं, जिनमें प्रमुख हैं—गंगा, सोन, पुनपुन, फल्गु, कर्मनाशा, दुर्गावती, कोसी, गंडक, घाघरा आदि।

बिहार का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 93.60 लाख हेक्टेयर है, जिसमें से केवल 55.65 लाख हेक्टेयर पर ही वास्तव में खेती होती है। वैसे राज्य में लगभग 77.19 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है। विभिन्न साधनों से कुल 46 लाख हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जबकि सिंचाई लगभग 34.62 लाख हेक्टेयर भूमि की ही होती है।

यहाँ की प्रमुख खाद्य फसलें हैं—धान, गेहूँ, मक्का और दालें। मुख्य नकदी फसलें हैं—गन्ना, आलू, तंबाकू, तिलहन, प्याज, मिर्च, पटसन

7:14
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

और मेस्ताप। लगभग 6.22 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में वन फैले हुए हैं, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के लगभग 6.65 प्रतिशत हैं।

प्राकृतिक संपदा

जंगल—6764.14 वर्ग किलोमीटर।
मुख्य पेड़—शीशम, सेमल, खैर, महुआ।
गंगा का डॉल्फिन 'सोंस' हमारा राष्ट्रीय एक्वेटिक एनिमल है।
वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान पश्चिमी चंपारण जिले के 800 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ

है। यह भारत का 18वाँ 'टाइगर रिजर्व' है, जो देश भर के बाघों की कुल संख्या में चौथे स्थान पर है।

7:14
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

है। यह भारत का 18वाँ 'टाइगर रिजर्व' है, जो देश भर के बाघों की कुल संख्या में चौथे स्थान पर है।

कुल क्षेत्रफल—94,163.00 वर्ग किलोमीटर (36,356.5 वर्ग मील)।

सड़क मार्ग—39,364 किलोमीटर।

रेल मार्ग—4000 किलोमीटर।

पर्वत—राजमहल, कैमूर।

जनसंख्या (2011)—10,38,04,637

7:14
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

जनसंख्या घनत्व—102.4 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर (2,855.2 व्यक्ति प्रति वर्ग मील)।

पुरुष—54,185,347

महिलाएँ—49,619,290

लिंगानुपात—1000 पुरुषों पर 916 महिलाएँ।

मानव विकास दर—वृद्धि 0.449 (मध्यम)।

साक्षरता दर—63.82 प्रतिशत।

राजभाषा—हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, मैथिली, मगही।

7:14
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

तापमान—गरमी में 47 से 20 डिग्री से., सर्दी में 28 से 4 डिग्री से.।

पहाड़ी भाग

राजगीर की पहाड़ियाँ, बराबर की पहाड़ियाँ, बटेश्वर की पहाड़ियाँ, कैमूर की पहाड़ियाँ, ब्रह्मयोनि पहाड़ी, प्रेतशिला पहाड़ी, रामशिला पहाड़ी।

बिहार में मुख्य रूप से तीन ऋतुएँ हैं—1. मार्च से मध्य जून तक ग्रीष्म ऋतु, 2. मध्य जून से अक्तूबर तक दक्षिण-पश्चिम मानसूनवाली वर्षा ऋतु, 3. नवंबर से फरवरी तक शीत ऋतु। सुदूर उत्तर को छोड़कर मई राज्य का सबसे गरम महीना होता है, जिसमें तापमान 32 डिग्री से.

7:15
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

को भी पार कर जाता है। राज्य में सामान्य वार्षिक वर्षा पश्चिम-मध्य में 1,016 मिमी. और सुदूर उत्तर में 1,524 मिमी. के बीच होती है। लगभग संपूर्ण वर्षा (85-90 प्रतिशत) जून और अक्तूबर के बीच होती है, और वर्षा का वार्षिक आँकड़ा जुलाई व अगस्त महीनों में 50 प्रतिशत होता है।

बिहार के जिले

प्रशासनिक दृष्टि से बिहार को 9 प्रमंडल तथा 38 मंडलों (जिला) में बाँटा गया है।

7:16
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

को भी पार कर जाता है। राज्य में सामान्य वार्षिक वर्षा पश्चिम-मध्य में 1,016 मिमी. और सुदूर उत्तर में 1,524 मिमी. के बीच होती है। लगभग संपूर्ण वर्षा (85-90 प्रतिशत) जून और अक्तूबर के बीच होती है, और वर्षा का वार्षिक आँकड़ा जुलाई व अगस्त महीनों में 50 प्रतिशत होता है।

बिहार के जिले

प्रशासनिक दृष्टि से बिहार को 9 प्रमंडल तथा 38 मंडलों (जिला) में बाँटा गया है।

7:16
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

जिलों को 101 अनुमंडलों, 534 प्रखंडों, 8,471 पंचायतों तथा 45,103 गाँवों में बाँटा गया है। शहरों की कुल संख्या 130 है। पटना, तिरहुत, सारण, दरभंगा, कोशी, पूर्णिया, भागलपुर, मुंगेर तथा मगध प्रमंडल के अंतर्गत आनेवाले जिले इस प्रकार हैं—

अररिया, अरवल, औरंगाबाद, कटिहार, किशनगंज, खगड़िया, गया, गोपालगंज, छपरा, जमुई, जहानाबाद, दरभंगा, नवादा, नालंदा, पटना, पश्चिम चंपारण, पूर्णिया, पूर्वी चंपारण, बक्सर, बाँका, बेगूसराय, भभुआ, भोजपुर, भागलपुर, मधेपुरा, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, मधुबनी, सासाराम, लखीसराय, वैशाली, सहरसा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, सीवान, सुपौल, शिवहर और शेखपुरा।

प्राकृतिक प्रदेश

बिहार के दक्षिण में छोटानागपुर का पठार, जिसका अधिकांश हिस्सा अब झारखंड में है

बिहार के जिले

28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in
7:16

7:16
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

तथा उत्तरी भाग में हिमालय पर्वत की नेपाल श्रेणी है। राज्य के 94.2 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में से 53300 वर्ग किमी. गंगा का उत्तरी मैदान है, जबकि 40,900 वर्ग किमी. दक्षिण बिहार में पड़ता है। भौगोलिक दृष्टि से बिहार को तीन प्राकृतिक भागों में बाँटा गया है—उत्तर का पर्वतीय एवं तराई भाग, मध्य का विशाल मैदान तथा दक्षिण का पहाड़ी किनारा।

उत्तर का पर्वतीय प्रदेश सोमेश्वर श्रेणी का हिस्सा है। इस श्रेणी की औसत ऊँचाई 455 मीटर है, परंतु इसका सर्वोच्च शिखर 874 मीटर ऊँचा है। सोमेश्वर श्रेणी के दक्षिण में तराई क्षेत्र है। यह दलदली क्षेत्र है, जहाँ साल वृक्ष के घने जंगल हैं। इन जंगलों में प्रदेश का इकलौता बाघ अभयारण्य वाल्मीकि नगर में स्थित है।

मध्यवर्ती विशाल मैदान बिहार के 95 फीसदी भाग को समेटे हुए है। नदियों की जल-प्रवाह प्रणाली, बाढ़, वर्षा और मिट्टी के प्रकार में आनेवाली क्षेत्रीय विशेषताओं के कारण बिहार के मैदान को तीन क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है—

1. तराई क्षेत्र—यह सोमेश्वर श्रेणी के तराई में लगभग 10 किलोमीटर चौड़ा कंकड़-बालू का निक्षेप है। इसके दक्षिण में तराई उपक्षेत्र है, जो प्राय: दलदली है।

2. भाँगर क्षेत्र—यह पुराना जलोढ़ क्षेत्र है। सामान्यत: यह आस-पास के क्षेत्रों से 7-8

7:17
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

2. भाँगर क्षेत्र—यह पुराना जलोढ़ क्षेत्र है। सामान्यत: यह आस-पास के क्षेत्रों से 7-8 मीटर ऊँचा है।

3. खादर क्षेत्र—इसका विस्तार गंडक से कोसी नदी क्षेत्र तक सारे उत्तरी बिहार में है। प्रत्येक वर्ष आनेवाली बाढ़ के कारण यह क्षेत्र बहुत उपजाऊ बन गया है। परंतु इसी बाढ़ के कारण यह क्षेत्र तबाही के कगार पर खड़ा है।

भूमि संसाधन

बिहार की अर्थव्यवस्था में भूमि संसाधन का स्थान सर्वोपरि है। राज्य के सभी भागों में

7:17
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

भूमि प्रायः उपजाऊ एवं कृषि-योग्य है, लेकिन सघन जनसंख्या के चलते भूमि पर दबाव अधिक है। कृषि योग्य कुल 93.6 लाख हेक्टेयर भूमि में से 56.03 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर शुद्ध रूप से खेती की जाती है। राज्य में 6764.14 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र है, जो कुल भूमि का मात्र 7.1 प्रतिशत है। मृदा के प्रकार, वर्षा तथा तापमान का वितरण तथा स्थलाकृतियों के हिसाब से बिहार के मैदान को इस प्रकार बाँटा गया है—

- उत्तरी जलोढ़ मैदान, उत्तर-पूर्वी जलोढ़ मैदान, दक्षिण-पूर्वी जलोढ़ मैदान तथा दक्षिण-पश्चिमी जलोढ़ मैदान।

मैदानी भाग एवं कृषि

राज्य की 76 प्रतिशत जनसंख्या कृषि से जुड़ी है। मुख्यतः खरीफ या रबी फसल के मौसम में खेती की जाती है। खरीफ फसलों का समय मध्य मई से प्रारंभ होकर अक्तूबर तक रहता है, जबकि जाड़े के आरंभ होने पर रबी फसलें बोई जाती हैं। फसल एवं ऋतु के पारस्परिक संबंधों पर राज्य की कृषि चार वर्गों में विभाजित है—

भदई (शरदकालीन)— मानसून पूर्व की वर्षा पर आधारित भदई फसलें भादों महीने (अगस्त-सितंबर) तक तैयार हो जाती हैं। मक्का, ज्वार, जूट तथा धान की कुछ विशेष किस्में भदई कहलाती हैं।

अगहनी (शीतकालीन)— बिहार की कृषि में अगहनी फसल का स्थान सर्वोपरि है। इसकी बुआई

7:17
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

जून में की जाती है और अगहन (दिसंबर) में तैयार हो जाती है। अगहनी फसल में धान प्रमुख है।

रबी (बसंतकालीन)—गेहूँ, जौ, चना, खेसारी, मटर, मसूर, अरहर, अलसी, सरसों आदि फसलें रबी के अंतर्गत आती हैं। इनकी बुआई अक्तूबर–नवंबर के महीने में होती है और गरमी के प्रारंभ होने तक तैयार हो जाती है। राज्य में कुल भूमि के एक तिहाई हिस्से पर रबी की फसलें बोई जाती हैं।

गरमी (ग्रीष्मकालीन)—आर्द्र भूमिवाले कुछ क्षेत्रों में विशेषत: धान, मक्का तथा सब्जियों की खेती की जाती है। सिंचाई व्यवस्था में प्रगति के साथ गरमी की कृषि के प्रसार की अच्छी संभावना है।

बिहार में धान, गेहूँ, मक्का, दलहन, तिलहन, तंबाकू, सब्जी तथा केला, आम और

7:17
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

लीची जैसे फलों की खेती की जाती है। हाजीपुर का केला, दरभंगा का आम व मखाना, मुजफ्फरपुर की लीची तथा शहद बहुत प्रसिद्ध हैं। लीची (28000 हेक्टेयर में) तथा शहद के उत्पादन में बिहार देश में अव्वल है। नगदी फसलें—जूट 9 प्रतिशत, गन्ना 1 प्रतिशत, आलू 4 प्रतिशत, तंबाकू, मिर्च तथा फूल की विभिन्न किस्में।

इसके अतिरिक्त देश के कुल उत्पादन का लगभग आधा शहद (मधु) बिहार में तैयार होता है, जहाँ इससे 1,06,000 परिवार जुड़े हैं। कृषि से जुड़े विषयों पर शिक्षा तथा शोध के लिए राज्य में संस्थानों की आधारभूत संरचना है। राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर) तथा इसके अंतर्गत 36 जिलों में खोले गए कृषि विज्ञान केंद्र बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में होनेवाली फसलों तथा बागवानी को बढ़ावा देने में सक्षम हैं। इसके अतिरिक्त राज्य में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा लीची, मखाना तथा पान पर शोध के लिए मुजफ्फरपुर में राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र की स्थापना की गई है।

दलदली क्षेत्र

सामान्यत: 'चौर' कहा जानेवाला यह क्षेत्र बिहार में कई भौगोलिक विशेषताओं का प्रदेश है। कई दलदली भाग तो इतने विशाल हैं कि ये जैव-विविधताओं के अतिरिक्त नदियों का उद्गम स्थल भी हैं। पटना, नालंदा तथा मुंगेर जिलों में जल जमाव

का क्षेत्र 'तालक्षेत्र' कहलाता है।

7:18
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

का क्षेत्र 'तालक्षेत्र' कहलाता है।

बिहार राज्य के धरातलीय स्रोत 15 नदियों के प्रवाह प्रदेश में विभाजित हैं। राज्य का उत्तरी मैदान धरातलीय तथा भूमिगत जल, दोनों ही दृष्टि से संपन्न है। गंगा के दक्षिणी मैदान में उपयोग में लाने योग्य जल संसाधन की मात्रा उत्तरी बिहार की तुलना में कम है, किंतु इसी भाग में जल संसाधन का अपेक्षाकृत अधिक उपयोग हुआ है। हिमालय, छोटानागपुर का पठार तथा विंध्याचल की पहाड़ियों से उतरनेवाली कई नदियाँ तथा जलधाराएँ बिहार में प्रवाहित होकर गंगा में विसर्जित होती हैं। गंगा नदी राज्य के लगभग बीचोबीच से बहती है। उत्तरी बिहार का समतल मैदान घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, अधवारा, कमला, कोसी और महानंदा नदियों का प्रवाह प्रदेश है। कर्मनाशा, सोन, पुनपुन, किऊल-हरोहर, वडुआ, चंदन तथा चीर नदियों के सात प्रवाह बिहार प्रदेश में गंगा के दक्षिणी मैदान से बहनेवाली नदियाँ हैं। वर्षा के दिनों में उत्तर बिहार की नदियों में बाढ़ एक बड़ी समस्या है। राज्य की प्रमुख नदी-बेसिन का अपवाह क्षेत्र, नदियों की लंबाई तथा बाढ़ प्रभावित क्षेत्र इस प्रकार है—

7:18
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

नदी बेसिन अपवाह क्षेत्र नदी की लंबाई एवं बाढ़ प्रभावित क्षेत्र

	(वर्ग किमी.)	(किमी.)	(वर्ग किमी.)
गंगा	19322	445	12920
कोसी	11410	260	10150
बूढ़ी गंडक	9601	320	8210
किऊल-हरोहर	17225	—	6340
पुनपुन	9026	235	6130
महानंदा	6150	376	5150
सोन	15820	202	3700
बागमती	6500	394	4440
कमला बलान	4488	120	3700
गंडक	4188	260	3350
घाघरा	299	83	2530
चंदन	4093	118	1130
वडुआ	2215	130	1050

प्राकृतिक दृष्टि से यह राज्य गंगा नदी द्वारा दो भागों में विभाजित है—उत्तर बिहार का मैदान और दक्षिण बिहार का मैदान। सुदूर पश्चिमोत्तर में हिमालय की तराई को छोड़कर गंगा का उत्तरी मैदान समुद्रतल से 75 मीटर से भी कम ऊँचाई पर जलोढ़ समतली क्षेत्र का निर्माण करता है और यहाँ बाढ़ आने की आशंका हमेशा बनी रहती है। घाघरा, गंडक, बागमती, कोसी, महानंदा और अन्य नदियाँ नेपाल में हिमालय से नीचे गिरती हैं तथा अलग-अलग जलमार्गों से होती हुई गंगा में मिलती हैं।

7:18
28-Janiye-Biha...
lots.bihar.gov.in

करता है और यहाँ बाढ़ आने की आशंका हमेशा बनी रहती है। घाघरा, गंडक, बागमती, कोसी, महानंदा और अन्य नदियाँ नेपाल में हिमालय से नीचे गिरती हैं तथा अलग-अलग जलमार्गों से होती हुई गंगा में मिलती हैं।

झीलें और गर्त—लुप्त हो चुकी इन धाराओं के प्रमाण हैं। विनाशकारी बाढ़ लाने के लिए लंबे समय तक 'बिहार का शोक' मानी जानेवाली कोसी नदी अब त्रिम पोतारोहणों में सीमित हो गई है। उत्तरी मैदान की मिट्टी ज्यादातर नई कछारी मिट्टी है, जिसमें बूढ़ी गंडक नदी के पश्चिम में खड़िया युक्त व हलकी कणवाली (ज्यादातर दोमट बलुई) और पूर्व में खड़िया मुक्त व भारी कण वाली (दोमट चिकनी) मिट्टी है। हिमालय के भूकंपीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण यह क्षेत्र एक अन्य प्राकृतिक आपदा (भूकंपीय गतिविधियों) से प्रभावित है। सन् 1934 और 1988 के भीषण भूकंप से भारी तबाही मची और जान-माल की भारी क्षति हुई।

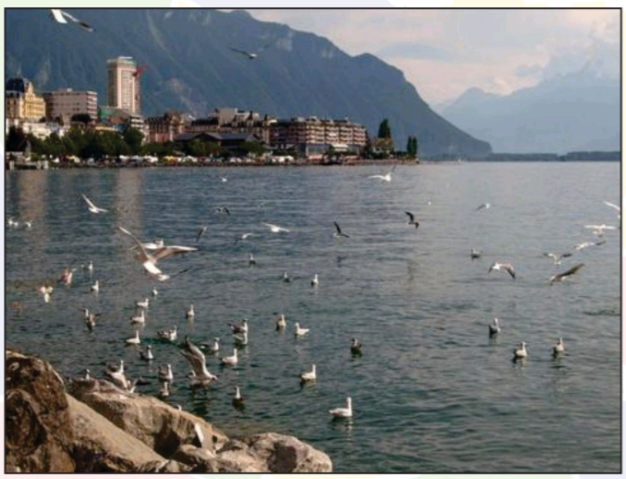

दक्षिण-पश्चिम में सोन घाटी के पार स्थित कैमूर पठार में क्षैतिज बालुकाश्म की परत चूना-पत्थर की परतों से ढकी है। उत्तर के मुकाबले दक्षिण गांगेय मैदान ज्यादा विविध है और अनेक पहाड़ियों का उत्थान कछारी सतह से होता है। सोन नदी को छोड़कर सभी नदियाँ छोटी हैं, जिनके जल को सिंचाई नहरों की ओर मोड़ दिया जाता है। यहाँ की मृदा काली चिकनी या पीली दोमट मिट्टी से संघटित अपेक्षाकृत पुरानी जलोढ़ है। खासकर यह दक्षिण की ओर अनुर्वर व रेतीली है।

❐❐❐